रक्तदान – महादान

प्रस्तावना यूँ तो भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही बहुत दानी हुए जिन्होनें धर्म और सत्य के लिए दान किए। पहले लोग कई दान करते थे जैसे - धन का दान, जानवरों का दान आदि। धर्म और सत्य के लिये दान देने वालों में से एक दधिचि थे, जिन्होनें अपनी अस्थियों तक का दान कर दिया। एक दानी राजा बलि थे, जिन्होंनें एक वामन देवता के कहने पर अपना सब कुछ दान कर दिया। एक दानी महारथी कर्ण हुए जिन्होनें अपने कवच कुण्डलों का दान कर दिया। एक दानी राजा शिवि हुए, जिन्होनें एक कबूतर के प्राणों की रक्षा के लिए अपना मांस तक दान कर दिया। लेकिन आज लोग गौ, धन, दान आदि नहीं करते क्योंकि वे इतने समर्थ नहीं है लेकिन जो समर्थ हैं। लेकिन जो समर्थ हैं वह दान नहीं करते। हम इन राजाओं, दानियों मुनियों जैसा दान तो नहीं कर सकते लेकिन आज हम ऐसा दान कर सकते हैं, जो सभी दानों में सर्वश्रेष्ठ है। अगर हमारे इस छोटे से दान से किसी की जान बच सकती है तो हमें वह दान करना चाहिए और वह दान है रक्तदान अर्थात् कहा भी गया है रक्तदान-महादान इसका अर्थ है कि रक्तदान सभी दानों से महान है।

रक्त की संरचना डॉ. लार्ड लैण्डस्टीनर ने रक्त की संरचना के बारे में वियना में स्थित एक प्रयोगशाला में कुछ प्रयोग किए। उन्होनें बताया कि रूधिर कणिकाओं में A और B दो ऐन्टीजन पाए जाते हैं और प्लाज्मा में दो एन्टी बॉडी a, b पाये जाते हैं। उन्होनें रक्त के तीन ग्रुपों A, B और O के बारे में बताया। यह प्रयोग उन्होनें 1900 में किया इसके दो वर्ष बाद 1902 में उन्हीं के विद्यार्थियों ने AB ग्रुप का और पता लगा लिया। इसके अतिरिक्त रक्त लाल रंग, पारदर्शक, स्वाद में नमकीन तथा तरल पदार्थ होता है इसके दो भाग होते हैं।

1. प्लाज्मा
2. लाल रक्त कणिकाएँ

(अ) **प्लाज्मा** - यह स्वच्छ, हल्के पीले रंग का तथा निर्जीव होता है। रक्त के भार का 55 प्रतिशत से 60 प्रतिशत भाग इसी का होता है तथा शरीर के भार का 5 प्रतिशत होता है। प्लाज्मा में लवण जैसे - सोडियम, मैग्नीशियम, फास्फोरस तथा आयोडाइड के बाइकार्बोनेट आदि पाये जाते हैं। प्लाज्मा में 0.29 प्रतिशत ऑक्सीजन, 0.5 प्रतिशत कार्बनडाइऑक्साइड तथा 0.5 प्रतिशत नाइट्रोजन घुलित अवस्था में पायी जाती है। इसमें प्रोटीन की मात्रा 0.7 प्रतिशत तथा ग्लूकोज की 0.1 प्रतिशत मात्रा पायी जाती है। इसमें उत्सर्जी पदार्थ यूरिक अम्ल, यूरिया, अमीनो अम्ल आदि पाये जाते हैं।

(ब) **लाल रक्त-कणिकाएँ** - रक्त का शेष 40 प्रतिशत भाग लाल रक्त कणिकाओं का होता है इसकी विभिन्न जीवों में इसकी संरचना, ओंति तथा आकार भिन्न-भिन्न होता है। लाल रूधिर कणिकाओं की मोटाई 2 म्यू तथा लम्बाई 7.1 म्यू होती है। इनका हमारे शरीर में जीवनकाल 60 से 80 दिनों तक का होता है।

यदि हमारे शरीर में रक्त बनने की दर कम हो जाती है, तो लाल रूधिर कणिकाओं की मात्रा भी कम जाती है, जिससे रूधिर क्षीणता रोग हो जाता है, यह रोग कोलिक अम्ल तथा ठ.12 की कमी से हो जाता है।

रक्त का हमारे शरीर में महत्त्व

जिस प्रकार जिंदा रहने के लिए सांस लेने की आवश्यकता होती है उसी प्रकार रक्त का हमारे जीवन में बहुत महत्त्व होता है। यह हीमोग्लोबिन से मुक्त ऑक्सीजन को श्वसन की सहायता से शरीर के विभिन्न हिस्सों में पहुँचाता है जिससे ऑक्सीजन का विभिन्न भागों में ऑक्सीउेशन होता है। उत्सर्जी पदार्थ जैसे यूरिया आदि को रक्त वृक्कों में पहुँचाता है। जिससे ये उत्सर्जी पदार्थ मूत्र के रूप में हमारे शरीर से बाहर निकलते हैं। रक्त के परिभ्रमण में आवश्यक पोषक तत्व हमारे शरीर के विभिन्न भागों में पहुँचते हैं। जब हमें चोट लग जाती है तो बहुत सा खून निकलता है इस समय लाल रक्त कणिकाओं द्वारा रक्त का थक्का जम जाता है और रक्त बहना बंद हो जाता है।

संस्था के उद्देश्य

रक्तदान कराने वाली संस्था पैसा कमाने के लिए यह कार्य नहीं करती बल्कि उनका तो एक ही उद्देश्य होता है कि अगर किसी चिकित्सालय में वो ग्रुप वाला रक्त नहीं है जो किसी मरीज के लिए चाहिए तो वो ऐसे चिकित्सालयों में अपनी संस्था से रक्त भेज देते हैं इस संस्था का यह उद्देश्य होता है कि चिकित्सालयों में सारी सुविधा उपलब्ध होने के बावजूद सिर्फ रक्त के अभाव में किसी व्यक्ति की मृत्यु न हो जाए। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह संस्था रक्त का दान करती है।

रक्तदान महादान है

हमारे देश में कई दान हुए हैं जैसे भूमि का, धन का, जानवरों का। लोगों का इन दानों के पीछे या तो कोई स्वार्थ होता है या कोई उद्देश्य, लेकिन रक्तदान ऐसा दान है जो कि स्वार्थ के कारण नहीं किया जाता बल्कि किसी की जान बचाने के लिए अगर हमें कुछ दान भी करना पड़े तो वह दान सभी दानों से श्रेष्ठ है।

रक्तदान करने संबंधी लोगों की भ्रांतियाँ

रक्तदान करने संबंधी लोगों में अनेक भ्रांतियाँ हैं लोगों का सोचना है कि रक्तदान करने से यदि हमारे शरीर में रक्त की कमी हो गई तो हम कई बीमारियों से घिर जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं है। एक पूर्ण स्वस्थ व्यक्ति हर तीन महीने में अपना रक्तदान कर सकता है। रक्तदान में व्यक्ति के शरीर से सिर्फ 300 मिली रक्त निकाला जाता है। प्लाज्मा इस कमी को 48 घंटों में पूरी कर लेता है और तीन महीने में लाल रक्त कणिकाएं दोबारा उतना खून बना लेती हैं जिससे व्यक्ति पुनः रक्तदान करने में समर्थ हो जाता है। मगर रक्तदान वही व्यक्ति कर सकते हैं जो

1. अपनी 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके हैं।
2. किसी भी प्रकार के व्यसन में लिप्त नहीं हैं और जो पूर्णतः स्वस्थ हैं।

रक्तदान एक ऐसा परोपकार है कि हम कोई अच्छा काम नहीं करते तो हम रक्तदान करके जीवन को सफल बना सकते है जिस प्रकार वृक्ष फल दूसरों को देता है तथा नदी अपने लिए नहीं बहती वह भी दूसरों

के ऊपर परोपकार करने के लिए निरंतर बहती है, और सूरज जो स्वयं जलकर दूसरों को गर्मी प्रदान करता है, जहाँ एक मोमबत्ती स्वयं जलकर दूसरों को उजाला प्रदान करती है, उसी प्रकार हम रक्तदान करके दूसरों पर उपकार कर सकते हें। सभी लोग अपने लिए जीते हैं परंतु हम अगर दूसरों के लिए जिएगें तो हमारा जीवन धन्य हो सकता है।

उपसंहार सभी लोगों को रक्तदान के महत्त्व के बारे में समझना चाहिए और रक्तदान करना चाहिए। जिससे किसी की जान बच सकती है और उसके कल्याण के साथ हमारा भी कल्याण हो सकता है। रक्तदान कोई पाप नहीं बल्कि यह एक पुण्य है। यह एक ऐसा पुण्य है जो सभी पुण्यों में श्रेष्ठकर है। रक्तदान की संस्था को रक्तदान करने के संबंध में बढ़ावा देना चाहिए और हमें भी उनकी सहायता करना चाहिए। प्राचीन काल में यदि व्यक्ति कवच-कुण्डल से लेकर स्वयं तक का दान कर सकता है तो क्या हम वर्तमान में रक्तदान नहीं कर सकते ? अंतिम शब्दों में यह कहना चाहूँगी :-

कि रक्तदान है महादान, इस मंत्र को अपनाना
जन-जन तक इस वाणी को, हम सबको है पहुँचाना।